श्रीमद् भागवत का यह सार
भगवद् भक्ति ही आधार

श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

कुंती स्तुति(भागवत मुखस्थ परीक्षा हेतु)

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

प्रथमः स्कन्धः

॥ अथाष्टमोऽध्यायः ॥

कुन्त्युवाच

नमस्ये पुरुषं(न्) त्वाऽऽद्य- मीश्वरं(म्) प्रकृतेः(फ्) परम् ।

अलक्ष्यं(म्) सर्वभूताना- मन्तर्बहिरवस्थितम् ॥ 1॥

कुन्ती उवाच– श्रीमती कुन्ती ने कहा; नमस्ये– मेरा नमस्कार है; पुरुषम् — परम पुरुष को; त्वा– आप; आद्यम्–मूल; ईश्वरम्—नियन्ता; प्रकृतेः- भौतिक ब्रह्माण्डों के; परम्—परे; अलक्ष्यम्– अदृश्य; सर्व– समस्त; भूतानाम्—जीवों के; अन्तः- भीतर; बहिः – बाहर; अवस्थितम् — स्थित ।

मायाजवनिकाच्छन्न- मज्ञाधोक्षजमव्ययम् ।

न लक्ष्यसे मूढदृशा, नटो नाट्यधरो यथा ॥ 2॥

माया—ठगने वाली; जवनिका – पर्दा; आच्छन्नम् — ढका; अज्ञा– अज्ञानी; अधोक्षजम्- भौतिक बोध की सीमा से परे (दिव्य); अव्ययम् —अविनाशी; न – नहीं; लक्ष्यसे – दिखता है; मूढ-दृशा- मूर्ख देखनेवाले के द्वारा; नटः- कलाकार; नाट्य-धरः- अभिनेता का भेष धारण किये; यथा- जिस प्रकार।

तथा परमहं(म्)सानां(म्), मुनीनाममलात्मनाम् ।

भक्तियोगविधानार्थं(ङ्),कथं(म्) पश्येम हि स्त्रियः ॥ 3॥

तथा — इसके अतिरिक्त; परमहंसानाम् – उन्नत अध्यात्मवादियों का; मुनीनाम् — महान चिन्तकों या विचारकों का; अमल- आत्मनाम्—आत्मा तथा पदार्थ में अन्तर करने में सक्षम; भक्ति-योग- भक्ति का विज्ञान; विधान -अर्थम् - सम्पन्न करने के लिए; कथम् – कैसे; पश्येम – देख सकती हैं; हि— निश्चित ही ; स्त्रियः - स्त्रियाँ ।

कृष्णाय वासुदेवाय, देवकीनन्दनाय च ।

नन्दगोपकुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः ॥ 4॥

कृष्णाय— भगवान् को; वासुदेवाय- वसुदेव के पुत्र को; देवकी - नन्दनाय - देवकी के पुत्र को; च—तथा; नन्द- गोप– नन्द तथा ग्वालों के; कुमाराय- पुत्र को; गोविन्दाय- भगवान् को, जो इन्द्रियों तथा गौवों के प्राण हैं; नमः -सादर नमस्कार; नमः- नमस्कार ।

नमः(फ्) पङ्कजनाभाय, नमः(फ्) पङ्कजमालिने ।

नमः(फ्) पङ्कजनेत्राय, नमस्ते पङ्कजाङ्घ्रये ॥ 5॥

नमः- नमस्कार है; पङ्कज- नाभाय – भगवान् को, जिनके उदर के मध्यभाग में कमल-पुष्प के समान विशेष गड्ढा है; नमः- नमस्कार; पङ्कज-मालिने – कमल - पुष्प की माला से निरन्तर सज्जित रहनेवाले को; नमः- नमस्कार; पङ्कज-नेत्राय—जिनकी दृष्टि कमल-पुष्प के समान शीतल है; नमः ते– आपको नमस्कार है; पङ्कज-अङ्घ्रये- कमल-पुष्पों से अंकित चरण के तलवों वाले को ।

यथा हृषीकेश खलेन देवकी,

कं(म्)सेन रुद्धातिचिरं(म्) शुचार्पिता ।

विमोचिताहं(ञ्) च सहात्मजा विभो,

त्वयैव नाथेन मुहुर्विपद्गणात् ॥ 6॥

यथा—मानो; हृषीकेश- इन्द्रियों के स्वामी; खलेन- ईष्यालु के द्वारा; देवकी- देवकी(श्रीकृष्ण की माता) कंसेन- राजा कंस द्वारा;रुद्धा- बन्दी बनाया गया; अति- चिरम् - दीर्घ काल तक; शुच- अर्पिता- दुखी; विमोचिता – मुक्तकिया; अहम् च — मैं भी;सह-आत्म-जा- अपने बच्चों सहित; विभो- हे महान्; त्वया एव - आप ही के द्वारा; नाथेन — रक्षक के रूप में; मुहुः - निरन्तर; विपत्-गणात् – विपत्तियों के समूह से

विषान्महाग्नेः(फ्) पुरुषाददर्शना-

दसत्सभाया वनवासकृच्छ्रतः ।

मृधे मृधेऽनेकमहारथास्त्रतो,

द्रौण्यस्त्रतश्चास्म हरेऽभिरक्षिताः ॥ 7॥

विषात्– विष से; महा- अग्नेः- प्रबल अग्निकाण्ड से; पुरुष-अद- मनुष्य के भक्षक से; दर्शनात्- मल्लयुद्ध करके; असत्—दुष्ट; सभायाः- सभा से; वन-वास- जंगल में प्रवासित; कृच्छ्रतः- कष्ट से; मृधे मृधे- युद्ध में बारम्बार; अनेक- अनेक; महा-रथ- बड़े-बड़े सेनानायक; अस्त्रतः- हथियार से; द्रौणि- द्रोणाचार्य के पुत्र के; अस्त्रतः- अस्त्र से; च— तथा; आस्म– था; हरे– हे भगवान्; अभिरक्षिताः - पूर्ण रूप से सुरक्षित।

विपदः(स्) सन्तु नः(श्) शश्वत्- तत्र तत्र जगद्गुरो ।

भवतो दर्शनं(यँ) यत्स्या- दपुनर्भवदर्शनम् ॥ 8॥

विपदः–विपत्तियाँ; सन्तु— आने दो; ताः– सारी; शश्वत्– पुनः तत्र— वहाँ; तत्र– तथा वहाँ;जगत्-गुरो— हे जगत के स्वामी; भवतः- आपकी; दर्शनम्- भेंट; यत्— जो; स्यात्— हो; अपुनः- फिर नहीं; भव-दर्शनम्- जन्म-मृत्यु को बारम्बार देखना।

जन्मैश्वर्यश्रुतश्रीभि- रेधमानमदः(फ्) पुमान् ।
नैवार्हत्यभिधातुं(वँ) वै, त्वामकिञ्चनगोचरम् ॥ 9॥

जन्म– जन्म; ऐश्वर्य— ऐश्वर्य; श्रुत– शिक्षा; श्रीभिः- सुन्दरता के स्वामित्व द्वारा; एधमान- लगातार वृद्धि करता हुआ; मदः– प्रमत्तता; पुमान्- मनुष्य; न– कभी नहीं; एव– ही; अर्हति– पात्र होता है; अभिधातुम्- सम्बोधित करने के लिये; वै–निश्चय ही; त्वाम्— आपको; अकिञ्चन-गोचरम्– जो भौतिक दृष्टि से दरिद्र मनुष्य के द्वारा सरलता से प्राप्त हो सके ।

नमोऽकिञ्चनवित्ताय, निवृत्तगुणवृत्तये ।
आत्मारामाय शान्ताय, कैवल्यपतये नमः ॥ 10॥

नमः- नमस्कार है; अकिञ्चन- वित्ताय- निर्धनों के धन -स्वरूप को; निवृत्त- भौतिक गुणों की क्रियाओं से सदा परे; गुण-भौतिक गुण; वृत्तये– स्नेह; आत्म- आरामाय- आत्मतुष्ट को; शान्ताय— परम शान्त को; कैवल्य-पतये— अद्वैतवादियों के स्वामी को; नमः- प्रणाम है।

मन्ये त्वां(ङ्) कालमीशान- मनादिनिधनं(वँ) विभुम् ।
समं(ञ्) चरन्तं(म्) सर्वत्र, भूतानां(यँ) यन्मिथः(ख्) कलिः ॥ 11॥

मन्ये– मानती हूँ; त्वाम्— आपको; कालम्- शाश्वत समय; ईशानम्— परमेश्वर; अनादि-निधनम्- आदि- अन्त रहित; विभुम्— सर्वव्यापी; समम्— समान रूप से दयालु; चरन्तम्- वितरित करते हुए; सर्वत्र - सभी जगह; भूतानाम्— जीवों का; यत् मिथः – मतभेद; कलिः– कलह ।

न वेद कश्चिद्भगवं(म्)श्चिकीर्षितं(न्),
तवेहमानस्य नृणां(वँ) विडम्बनम् ।
न यस्य कश्चिद्दयितोऽस्ति कर्हिचिद् ,
द्वेष्यश्च यस्मिन् विषमा मतिर्नृणाम् ॥ 12॥

न—नहीं; वेद—जानता ; कश्चित्– कोई ; भगवन्– हे भगवान्; चिकीर्षितम्— लीलाएँ; तव- आपकी; ईहमानस्य – सांसारिक व्यक्तियों की भाँति ; नृणाम् - सामान्य लोगों का; विडम्बनम्– भ्रामक; न– कभी नहीं; यस्य – जिसका; कश्चित्—कोई; दयितः- विशेष कृपा- पात्र; अस्ति— है; कर्हिचित्— कहीं; द्वेष्यः – ईर्ष्या की वस्तु; च-तथा; यस्मिन् — जिसमें; विषमा – पक्षपात; मतिः- विचार; नृणाम् – मनुष्यों का ।

जन्म कर्म च विश्वात्मन्-नजस्याकर्तुरात्मनः ।
तिर्यङ्नृषिषु यादः(स्)सु, तदत्यन्तविडम्बनम् ॥ 13॥

जन्म– जन्म; कर्म– कर्म; च- तथा; विश्व- आत्मन्- हे विश्व के आत्मा; अजस्य– अजन्मा की; अकर्तुः- निष्क्रिय की; आत्मनः–प्राण-शक्ति की; तिर्यक्– पशु; नृ– मनुष्य; ऋषिषु— ऋषियों में; यादःसु– जल में; तत्—वह; अत्यन्त— वास्तविक, अत्यन्त; विडम्बनम्- भ्रामक, चकराने वाली

गोप्याददे त्वयि कृतागसि दाम तावद्,
या ते दशाश्रुकलिलाञ्जनसम्भ्रमाक्षम् ।
वक्त्रं(न्) निनीय भयभावनया स्थितस्य,
सा मां(वँ) विमोहयति भीरपि यद्बिभेति ॥ 14॥

गोपी-ग्वालिन (यशोदा) ने; आददे– लिया; त्वयि– आप पर; कृतागसि- अड़चन डालने पर(मक्खन की मटकी फोड़ने पर) दाम- रस्सी; तावत्- उस समय; या– जो; ते- तुम्हारी; दशा— स्थिति; अश्रु- कलिल- अश्रुपूरित; अञ्जन— काजल; सम्भ्रम- विचलित; अक्षम्— नेत्र; वक्त्रम्- चेहरा, मुँह; निनीय- नीचे की ओर; भय- भावनया- भय की भावना से; स्थितस्य — स्थिति का; सा– वह; माम् – मुझको; विमोहयति — मोहग्रस्त करती है; भीः अपि— साक्षात् भय भी; यत् — जिससे; बिभेति— भयभीत है ।

केचिदाहुरजं(ञ्) जातं(म्), पुण्यश्लोकस्य कीर्तये ।
यदोः(फ्) प्रियस्यान्ववाये, मलयस्येव चन्दनम् ॥ 15॥

केचित्— कोई; आहुः- कहता है; अजम् – अजन्मा; जातम् – उत्पन्न; पुण्य- श्लोकस्य – महान पुण्यात्मा राजा की; कीर्तये- कीर्ति-विस्तार करने के लिए; यदोः- राजा यदु का; प्रियस्य – प्रिय; अन्ववाये- कुल में; मलयस्य- मलय पर्वत का; इव – सदृश; चन्दनम्- चन्दन ।

अपरे वसुदेवस्य, देवक्यां(यँ) याचितोऽभ्यगात् ।
अजस्त्वमस्य क्षेमाय, वधाय च सुरद्विषाम् ॥ 16॥

अपरे—अन्य लोग; वसुदेवस्य- वसुदेव का; देवक्याम् — देवकी का; याचितः- प्रार्थना किये जाने पर; अभ्यगात्- जन्म लिया; अजः – अजन्मा; त्वम् – आप; अस्य - इसके; क्षेमाय- कल्याण के लिए; वधाय- वध करने के लिए; च- तथा; सुर- द्विषाम्- देवताओं से ईर्ष्या करनेवालों का ।

भारावतारणायान्ये, भुवो नाव इवोदधौ ।
सीदन्त्या भूरिभारेण, जातो ह्यात्मभुवार्थितः ॥ 17॥

भार- अवतारणाय– संसार का भार कम करने के लिए; अन्ये- अन्य लोग; भुवः- संसार का; नावः- नाव; इव- सदृश; उदधौ—समुद्र में; सीदन्त्याः- आर्त, दुखी; भूरि- अत्यधिक; भारेण- भार से; जातः- उत्पन्न; हि–निश्चय ही; आत्म- भुवा- ब्रह्मा द्वारा; अर्थितः- प्रार्थना किये जाने पर ।

भवेऽस्मिन् क्लिश्यमानाना- मविद्याकामकर्मभिः।

श्रवणस्मरणार्हाणि, करिष्यन्निति केचन ॥ 18॥

भवे- भौतिक संसार में; अस्मिन्— इस; क्लिश्यमानानाम्- कष्ट भोगने वालों का; अविद्या- अज्ञान; काम— इच्छा; कर्मभिः– सकाम कर्म करने के कारण; श्रवण– सुनने; स्मरण- याद करने; अर्हाणि– पूजन; करिष्यन् — कर सकता है; इति— इस प्रकार; केचन- अन्य लोग ।

शृण्वन्ति गायन्ति गृणन्त्यभीक्ष्णशः(स्),

स्मरन्ति नन्दन्ति तवेहितं(ञ्) जनाः ।

त एव पश्यन्त्यचिरेण तावकं(म्),

भवप्रवाहोपरमं(म्) पदाम्बुजम् ॥ 19॥

शृण्वन्ति— सुनते हैं; गायन्ति- कीर्तन करते हैं; गृणन्ति- ग्रहण करते हैं; अभीक्ष्णशः– निरन्तर; स्मरन्ति– स्मरण करते हैं; नन्दन्ति— हर्षित होते हैं; तव- आपके; ईहितम् – कार्य-कलापों को; जनाः – लोग; ते– वे; एव – निश्चय ही; पश्यन्ति — देख सकते हैं; अचिरेण- शीघ्र ही; तावकम्- आपका; भव- प्रवाह- पुनर्जन्म की धारा; उपरमम्— बन्द होना, रोकना; पद- अम्बुजम्— चरणकमल ।

अप्यद्य नस्त्वं(म्) स्वकृतेहितं प्रभो,

जिहाससि स्वित्सुहृदोऽनुजीविनः ।

येषां(न्) न चान्यद्भवतः(फ्) पदाम्बुजात्,

परायणं(म्) राजसु योजितां(म्)हसाम् ॥ 20॥

अपि— यदि; अद्य– आज; नः– हमको; त्वम्- आप; स्व-कृत- अपने आप सम्पन्न; ईहित- सारे कर्म; प्रभो- हे मेरे प्रभु; जिहाससि– त्यागते हो; स्वित्- सम्भवतःसुहृदः– घनिष्ठ मित्र; अनुजीविनः- दया पर निर्भर; येषाम्- जिनका; न—न तो; च—तथा; अन्यत्– कोई अन्य; भवतः– आपके; पद- अम्बुजात्— चरणकमलों से; परायणम्– आश्रित; राजसु- राजाओं के प्रति; योजित- लगे हुए; अंहसाम्- शत्रुता ।

के वयं(न्) नामरूपाभ्यां(यँ),यदुभिः(स्) सह पाण्डवाः ।

भवतोऽदर्शनं(यँ) यर्हि, हृषीकाणामिवेशितुः ॥ 21॥

के— कौन हैं; वयम्— हम; नाम- रूपाभ्याम्— ख्याति तथा सामर्थ्यरहित; यदुभिः- यदुओं के; सह—साथ; पाण्डवाः – तथा पाण्डवगण; भवतः- आपकी; अदर्शनम्— अनुपस्थिति; यर्हि– मानो; हृषीकाणाम्- इन्द्रियों का; इव– सदृश; ईशितुः- जीव का ।

नेयं(म्) शोभिष्यते तत्र, यथेदानीं(ङ्) गदाधर ।

त्वत्पदैरङ्किता भाति, स्वलक्षणविलक्षितैः ॥ 22॥

न—नहीं; इयम्—यह हमारा राज्य; शोभिष्यते- सुन्दर लगेगा; तत्र- तब; यथा- जैसा अब है, इस रूप में; इदानीम्- कैसे; गदाधर—हे कृष्ण; त्वत्– आपके; पदैः– चरणों के द्वारा; अङ्किता– अंकित; भाति— शोभायमान हो रही है; स्व-लक्षण- आपके चिह्नों से; विलक्षितैः- चिह्नों से

इमे जनपदाः(स्) स्वृद्धाः(स्),सुपक्वौषधिवीरुधः ।

वनाद्रिनद्युदन्वन्तो, ह्येधन्ते तव वीक्षितैः ॥ 21॥

इमे—ये सब; जन-पदाः– नगर तथा शहर; स्वृद्धाः– समृद्ध; सुपक– पूर्ण रूप से पक्व; औषधि– जड़ी-बूटी; वीरुधः– वनस्पतियाँ; वन– जंगल; अद्रि– पहाड़ियाँ; नदी– नदियाँ ; उदन्वन्तः– समुद्र; हि– निश्चय ही; एधन्ते– वृद्धि करते हुए; तव- आपके; वीक्षितैः- देखने से।

अथ विश्वेश विश्वात्मन्, विश्वमूर्ते स्वकेषु मे ।

स्नेहपाशमिमं(ञ्) छिन्धि, दृढं(म्) पाण्डुषु वृष्णिषु ॥ 22॥

अथ—अत: विश्व-ईश- हे ब्रह्माण्ड के स्वामी; विश्व-आत्मन्— हे ब्रह्माण्ड के आत्मा; विश्व-मूर्ते – हे विश्व-रूप; स्वकेषु — मेरे स्वजनों में; मे– मेरे; स्नेह-पाशम्- स्नेह बन्धन को; इमम्— इस; छिन्धि- काट डालो; दृढम् — कड़े; पाण्डुषु- पाण्डवों के लिए; वृष्णिषु - वृष्णियों के लिए भी ।

त्वयि मेऽनन्यविषया, मतिर्मधुपतेऽसकृत् ।

रतिमुद्वहतादद्धा, गङ्गेवौघमुदन्वति ॥ 23॥

त्वयि—आप में; मे—मेरा;अनन्य- विषया– अनन्य; मतिः– ध्यान; मधु-पते- हे मधु के स्वामी; असकृत्— निरन्तर; रतिम्—आकर्षण; उद्वहतात्— आप्लावित हो सकता है;अद्धा- प्रत्यक्ष रीति से;गङ्गा- गंगानदी; इव– सदृश; ओघम्— बहती है; उदन्वति – समुद्र को ।

श्रीकृष्ण कृष्णसख वृष्ण्यृषभावनिध्रुग्-

राजन्यवं(म्)शदहनानपवर्गवीर्य ।

गोविन्द गोद्विजसुरार्तिहरावतार,

योगेश्वराखिलगुरो भगवन्नमस्ते ॥ 24॥

श्री-कृष्ण—हे कृष्ण; कृष्ण-सख– हे अर्जुन के मित्र; वृष्णि– वृष्णि कुल के; ऋषभ- हे प्रमुख; अवनि– पृथ्वी; ध्रुक्— विप्लवी; राजन्य- वंश- राजाओं का वंश; दहन- हे विनाशकर्ता; अनपवर्ग— बिना अवनति के; वीर्य- पराक्रम;

गोविन्द—हे गोलोक के स्वामी; गो – गौवों के; द्विज - ब्राह्मणों के; सुर- देवताओं के; अर्ति- हर— दुख दूर करने के लिए; अवतार— हे अवतार लेनेवाले; योग-ईश्वर- हे योग के स्वामी; अखिल- सम्पूर्ण जगत के; गुरो – हे गुरु; भगवन् — हे समस्त ऐश्वर्यों के स्वामी; नमः ते — आपको नमस्कार है |

॥ इति॥

भागवत मुखस्थ परीक्षा हेतु यह पीडीएफ विशेष रूप से परीक्षार्थियों के लिए ही संकलित की गई है, अतः मूल पुस्तक में दिए गए श्लोकांक इस पीडीएफ के श्लोकांकों से भिन्न हो सकते हैं।